ISSN No. 3139-9568 (Online)
Vol.- 01 No.1 Issue - Jun-2026

स्वच्छ पेयजल की चुनौति से जूझता आदिम जनजाति भूमिया

प्रहलाद कुमार सोनवानी
पी–एच.डी. शोध छात्र,
कलिंगा विश्वविद्यालय नया, रायपुर (छ.ग.)

आज के बदलते दौर में नगरीय समुदाय स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त सजग हो गई है उसे मालूम है कि पेयजल यदि स्वच्छ न हो तो व्यक्ति पीलिया ,डायरीया जैसे खतरनाक रोगों का सामना करना पडेगा कई बार इससे जान तक चली जाती है। दैनिक अखबार पत्रिका 14 मई 2014 के अनुसार राजधानी के 25 फीसदी आबादी पीलियाग्रस्त जिसमें 4000 का परीक्षण जिसमें 1000 में पीलिया का लक्षण और 100 गंभीर रोगी पाये गये तथा 24 जान गवां चुके है। यह रोग जलजनित रोग है जो दूषित जल के सेवन से फैले है। यह स्थिति राजधानी की है जहां लोग स्वयं सजग होते तथा जहां लोग एक्वागार्ड, एक्वासियोर, पियोरिट् जैसे किटाणु रोधन मशीनों का बडे पैमाने पर उपयोग करता है ऐसे स्थिति में गांव–दूरदराज की स्थिति जहां स्वास्थ्य के आधारभूत साधनों का अभाव और स्वच्छ पेयजल का ही अभाव हो वहां की हाल क्या हो सकती है इसी समस्या को ध्यान में रखकर सरकार द्वारा ग्रामीण एवं दूरदराज क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों को स्वच्छ पेयजल उपपलब्ध कराने के लिए कई प्रयास किये गये है सरकार द्वारा सर्वप्रथम प्रारंभिक प्रयास 1972–73 में ग्रामीण जेयजल आपूर्ति कार्यक्रम (ए.आर.डब्ल्यु.एस.पी.) कियान्वित किया जो 1986 तक जारी रहा सेकेण्ड जनरेशन में 1986–87 में मिशंन का नाम परिवर्तन करते हुए टेक्नोलॉजी मिशन प्रारम्भ की गई। इसके प्श्चात् 1991–92 में राजीवगांधी राष्ट्रीय पेयजल मिशन कियान्वित किया तथा 2002 में स्वजलधारा कार्यक्रम लागू किया। इस प्रकार सरकार द्वारा

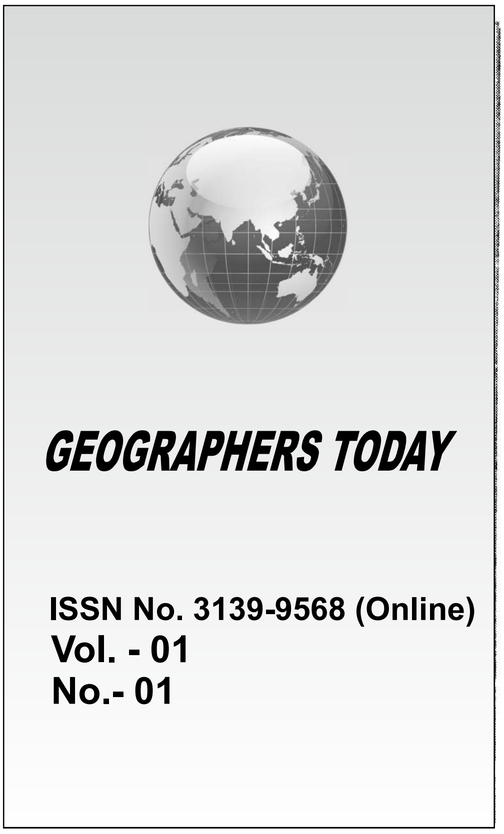

ISSN No. 3139-9568 (Online)
Vol.- 01 No.1 Issue - Jun-2026

पेयजल की दिशा में लगातार प्रयास किया है। देश में लगभग 75 आदिम जनजातियां है जो देश के पहाड़ी एवं दुर्गम क्षेत्रों में निवास करती है। यह समुदाय कई आधारभूत समस्याओं से जूझ रहा है। इनके समस्याओं में स्वच्छ पेयजल एक प्रमुख समस्या है। इनके लिए स्वच्छ पेयजल प्राप्त करना किसी चुनौती से कम नहीं है कई परिवार ऐसे हैं जो काफी दूर से पेयजल लेकर आती है और परिवार की पानी की आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह समुदाय पेयजल के लिए आज भी कुआं, झरना, नाला, डबरी, तालाब, नदी जैसे परम्परागत स्त्रोतों से पेयजल आपूर्ति करने हेतु विवश है तथा वह जल–जनित रोगों के आये दिन शिकार होता रहता है। ऐसे जनजातियों में से एक भूमिया जनजाति है जो छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा संभाग के दूर–दराज जंगलों में निवास करती है। इस जनजाति को छत्तीसगढ़ राज्य के आदिम जनजाति का दर्जा प्राप्त है तथा इनके विकास के लिए सरकार पिछले कई वर्षों से प्रयासरत है, इसके उपरांत भी यह समुदाय परिवार के लिए स्वच्छ पेयजल की समस्या से जूझ रहा है।

इस जनजाति में शिक्षा का स्तर भी निम्न होने के कारण स्वच्छ पेयजल के संबंध में उचित जानकारी का अभाव पाया गया है। इस जनजाति के लोग अभी भी पेयजल हेतु परम्परागत जल स्त्रोतों पर ही निर्भर रहते हैं। गर्मियों के मौसम में स्थिति और भी खराब हो जाती है इन्हें कोसों दूर जाकर पेयजल की व्यवस्था करना पड़ता है। यह स्थिति पेयजल की है ऐसे में नहाने–धोने की व्यवस्था किस स्तर की होगी सहजता से आंकलन किया जा सकता है। कई परिवार ऐसे हैं जो 5–6 दिनों में एकाद बार हीं स्नान कर पाते हैं तथा इनमें कुछ गिने–चुने ऐसे भी है जो कई महा से स्नान नहीं किये होते और स्नान किये बगैर रहना आदत बना लेते है। यह समस्या इनके स्वास्थ्य को व्यापक रूप से प्रभावित करता है जिससे लोग बडी मात्रा में बीमार हो जाते हैं। शोध पत्र में भूमिया जनजाति में पेयजल स्त्रोतों एवं पेयजल समस्याओं को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

भूमिया जनजाति का संक्षिप्त परिचय :–

भूमिया जनजाति जंगल एवं पहाड़ी क्षेत्र में रहने वाली एक जनजाति है। जिसकी गिनती आर्थिक संसाधन जुटाने के आधार पर पहाड़ी एवं जंगली जनजातियों की श्रेणी में की जाती है। इस जनजाति के जो लोग वन्य समाज से बाहर आकर रहने लगे हैं वे

ISSN No. 3139-9568 (Online)
Vol.- 01 No.1 Issue - Jun-2026

जीविकोपार्जन के लिए मजदूरी पर निर्भर हैं। पांडो जनजाति द्रविड़ीयन परिवार की एक जनजाति समूह है। यह जनजाति मध्यप्रदेश की आदिम जनजाति भारिया जनजाति का एक उप–समूह है, जिसे छत्तीसगढ़ में भूमिया, भुंईहर, पलिहा और पांडो जनजाति के नाम से जाना जाता है। डोला एवं सहयोगी (2006) ने भूमिया जनजाति के स्वास्थ्य का अध्ययन किया है जिसमें उन्होनें भूमिया जनजाति में भोजन की पौष्टिकता निम्न स्तर होना बताया है जिससे भूमिया जनजाति के लोगों का ऊंचाई एवं वजन अपेक्षाकृत कम होना पाया गया है।

भूमिया जनजाति अभी भी कुछ हद तक अर्द्धनग्न अवस्था में रहते हैं पुरूष सिर्फ एक लंगोट अपने कमर में लपेटे रहते हैं और महिलाएं एक सफेद धोती पहनती हैं और इसी से अपने शरीर के ऊपरी भागों को ढकती हैं। भूमिया लोग मध्यम तथा छोटे कद के होते हैं। इनके शरीर का बनावट डालिकों सिफैलिक आकार की होती है।

जिसमें मैसोसिफैलिक आकार का भी कुछ तत्व विद्यमान है। इनके चेहरे का आकार माध्यम से लम्बी विशेषता लिए हुए होता है, तथा इनकी ठूड्डी कम विकसित होती है इनके शरीर का रंग सांवले से काला होता है तथा शरीर पर कम बाल दिखते हैं, इनके शरीर का बनावट हस्टपुस्ट व मजबूत नहीं हैं। रसैल एवं हीरालाल (1975) ने अपने अध्ययन में इस जनजाति समूह को एक्सोगेमस समूह कहा है तथा इनमें 18 समूह में विभाजित किया है। मोहन्ती (2004 :46–47) ने मध्यप्रदेश में इस जनजाति का 12 गोत्र समूह बतलाया है, जिसमें अमोलिया, अनगरिया, बाफोतिया, भरडिया, बीरजिया, छलथिया, गादरिया, मेनहनीया, नहाल, पचहालीया, राओतीया एवं ठाकुरिया प्रमुख गोत्र समूह है। यह जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा, सूरजपुर, कोरिया एवं बलरामपुर जिला में निवास करती है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य भूमिया ग्रामों में पेयजल की सुविधा को ज्ञात करना तथा भूमिया जनजाति के स्वास्थ्य में शुद्ध पेयजल की भूमिका का अध्ययन करना है।

शोध उपकल्पना :–

ISSN No. 3139-9568 (Online)
Vol.- 01 No.1 Issue - Jun-2026

1. भूमिया गॉव में जहां स्वच्छ पेयजल की सुविधा उपलब्ध है उनकी अपेक्षा जहां स्वच्छ पेयजल की सुविधा उपलब्ध नहीं है वहां जलजनित रोगों से पीड़ित रहते हैं।
2. भूमिया गॉव में शिक्षित लोगों की अपेक्षा अशिक्षित लोग जलजनित रोगों से ज्यादा पीड़ित होते हैं।

अध्ययन पद्धति :–

प्रस्तुत अध्ययन पायलट सर्वेक्षण के द्वारा भूमिया जनजाति निवास ग्राम में उपलब्ध पेयजल की सुविधा का अवलोकन करके स्वच्छ पेयजल की जानकारी ज्ञात की जाएगी। तथा द्वितीयक तथ्यों को संग्रहित कर अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

अनुपपुर जिला एक नया जिला है, यह जिला शहडोल जिला से पृथक कर के जिला बनाया गया है। प्रशासनिक दृष्टि से सूरजपुर जिला में कुल 04 विकासखण्ड ।

प्रस्तुत अध्ययन जैतिहारी विकासखण्ड पर आधारित है। जैतिहारी विकासखण्ड जनजातीय विकासखण्ड है जिसका भौगोलिक क्षेत्रफल 471.04 एस.क्यू.आर. कि.मी. है। विकासखण्ड की कुल जनसंख्या 70894 है जिसमें 42831 जनजातीय आबादी है अर्थात कुल जनसंख्या का 60.41 प्रतिशत आबादी जनजातियों का है तथा कुल साक्षरता (जिला गठन वर्ष 2010 के अनुसार) दर 51.49 है।

जैतिहारी विकासखण्ड में ग्राम पंचायतों की संख्या 60 है। और गांवों की कुल संख्या 100 है, जिसमें, से 78 गॉव में **भूमिया** जनजाति निवास करती है जिसमें कुल परिवार की संख्या 2030 है। शासन के वर्ष 2009–10 के सर्वेक्षण के अनुसार **भूमिया** जनजाति की कुल जनसंख्या 9256 है जिसमें पुरूष 4671 और महिला 4585 है।

भूमिया ग्राम में पेयजल सुविधा :–

व्यक्ति के जीवन में स्वच्छ पेयजल की आवश्यकता बहुत महत्वपूर्ण होती है इसके अभाव में व्यक्ति कई जलजनित रोगों से पीड़ित हो जाता है। भूमिया ग्रामों में सुरक्षित एवं पर्याप्त पेयजल आज भी उपलब्ध नहीं है। अध्ययनगत ओड़गी विकासखण्ड में पेयजल सुविधा हेतु 970 हेण्डपम्प 07 नलकूप एक नल–जल योजना, 95 कुंआ और 1301 अन्य जल स्त्रोत (कुआं, झरना, नाला, डबरी, तालाब, नदी इत्यादि) उपलब्ध हैं, उपलब्ध जल

ISSN No. 3139-9568 (Online)
Vol.- 01 No.1 Issue - Jun-2026

स्त्रोतों के माध्यम से ज्ञात होता है कि अधिकांश भूमिया परिवार परम्परागत जल स्त्रोतों से प्राप्त पानी का उपयोग करते हैं। वर्तमान जागरूक व शिक्षित परिवार में पानी के उपयोग से पहले ब्लीचिंग पाऊडर, क्लोरीन टेबलेट से पानी का शुद्धिकरण करके उपयोग में लाते हैं, किन्तु भूमिया परिवार में शिक्षा व जागरूकता के अभाव में पानी के शुद्धिकरण हेतु उचित विधियों को नहीं अपनाते हैं जिसके कारण जलजनित रोग हैजा, पेट के कीड़े, पीलिया, उल्टी दस्त व अमीबा रूग्णता आदि रोगों के शिकार होते हैं। श्रीवास्तव (1996) ने भूमिया जनजाति शीर्षक पर आधारित अध्ययन किया है जिसमें उन्होनें भूमिया जनजाति के जनसंख्या का वितरण, उनकी परम्परा, संस्कृति, लोक–गीतों, उनके आवास की संरचना उनकी जीवन शैली सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया जिसमें उन्होनें 90 प्रतिशत भूमिया जनजाति के लोगों में स्वास्थ्य समस्या निवास ग्राम में शासन के नियमानुसार उपयुक्त स्वच्छ पेयजल की सुविधा नहीं होना पाया गया है। पेयजल हेतु परम्परागत जल स्त्रोतों पर निर्भर होना उल्लेख किया है।

तालिका क्रमांक – 1
भूमिया जनजाति में पेयजल स्त्रोत की सुविधा

क्र.	पेयजल स्त्रोत	संख्या	प्रतिशत
1.	हेण्डपम्प	970	40.8
2.	नलकूप	07	0.38
3.	नल जल योजना	01	00.04
4.	कुंआ	95	3.99
5.	झरना/ नाला/ डबरी/ तालाब/नदी	1301	54.79
	योग –	2374	100

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि भूमिया परिवार के कुल जनसंख्या का 40.8 प्रतिशत लोग हैण्डपम्प पर 0.38 प्रतिशत नलकूप पर 0.04 प्रतिशत नल जल योजना पर 3.99 प्रतिशत कुआं पर व अधिकतम 54.79 प्रतिशत आबादी झरना, नाला, डबरी, तालाब, नदी पर जल के लिए निर्भर हैं। चूंकि अधिकतम आबादी अन्य जल स्त्रोतों पर निर्भर रहने के कारण पानी की स्वच्छता निश्चित नहीं रहती है जिसके कारण उनके सेवन से कई जलजनित रोगों से पीड़ित होते हैं।

ISSN No. 3139-9568 (Online)
Vol.- 01 No.1 Issue - Jun-2026

अध्ययन में यह पाया गया कि बरसात के मौसम में दूशित जल की समस्या होती है वहीं गरमी के मौसम में परम्परागम जल के स्त्रोत सूख जाते है जिससे पेयजल प्राप्त करने की समस्या का सामना करना पडता है। ऐसे में जल के अभाव में इनके निस्तारी भी प्रभावित होता है जिससे लोग कई दिनो में स्नान कर पाते जो उनके स्वास्थ्य को सीधे प्रभावित करता है । इस संबंध में यादव **(आदिवासी समुदाय में स्वास्थ्य के कुछ पक्ष रावत पब्लिकेशन दिल्ली :1994)** के अध्ययन में 91.75 प्रतिशत उत्तरदाता मौका मिलने पर स्नान करते है पाया गया था यह तथ्य आज भी भूमियां जनजाति लोगों में लागू होती है।

भूमिया जनजाति लोगों जलजनित रोगों की समस्या :—

ग्रांम पंचायत पासल का अध्ययन हेतु चयन किया गया है। यहां की कुल जनसंख्या 1481 है। जिसमें भूमियां परिवार की जनसंख्या 519 हैं। जिसमें भूमियां पुरूष की जनसंख्या 266 व स्त्री जनसंख्या 253 है, इनकी परिवार की कुल संख्या 114 है। यह बारहमासी सड़क सुविधा से जुड़ा हुआ है। तथा पेयजल सुविधा हेतु 13 हैण्ड पंप व अन्य जलस्त्रोत 9 है, अन्य मूलभूत सुविधाओं में ग्रांम पंचायत भवन, आंगनबाड़ी केन्द्र, 6 प्राथमिक शाला 2 माध्यमिक शाला, व स्वास्थ्य केन्द्र की सुविधा गांव में ही उपलब्ध है। स्वास्थ्य केन्द्र से प्राप्त जानकारी के अनुसार भूमिया बाहुल ग्राम — पासल में जलजनित रोगों से पीड़ित भूमिया जनजाति की संख्या औसत एक माह का निम्नानुसार है।

तालिका क्रमांक — 2

भूमिया जनजाति में स्वास्थ्य की स्थिति

क्र.	बीमारी का नाम	माह में पीड़ित लोगों की संख्या	वर्ष में पीड़ित लोगों की संख्या	प्रतिशत
1.	उल्टी दस्त	05	60	11.56
2.	अतिसार	06	72	13.87
3.	आम अतिसार	04	48	9.24
4.	पेट के कीड़े	08	96	18.49
5.	पीलिया	01	12	2.31
	योग —	**45**	**288**	**55.47**

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि भूमिया जनजाति के कुल पारिवारिक जनसंख्या का 55.47 प्रतिशत लोग जलजनित रोगों से पीड़ित पाये गये हैं जिनमें से 11.56 प्रतिशत उल्टी दस्त से 13.87 प्रतिशत अतिसार 9.24 आम अतिसार 18.49 प्रति ात पेट के

ISSN No. 3139-9568 (Online)
Vol.- 01 No.1 Issue - Jun-2026

कीड़े 2.31 प्रतिशत पीलिया रोग से पीड़ित पाये गये हैं। जो कि भूमिया जनजाति के लोगों में स्वच्छ पेयजल के अभाव में जलजनित रोगों से पीड़ित होना दर्शाता है। स्वास्थ्य के प्रति जागरूक व स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित होने से जलजनित
रोगों से बचाव किया जा सकता है।

भूमिया जनजाति में शिक्षा का स्तर :–

भूमिया जनजाति के जीवन शैली में शिक्षा कोई खास महत्व नहीं रखता है। यह समूह तो आज और वर्तमान में जीवित रहती है, इनके जीवन का कोई निश्चित उद्दे य नहीं होती है सीमित आवश्यकता इनकी पहचान बनी हुई है भूमिया परिवार के लोगों में शिक्षा अर्जित कर सरकारी नौकरी में लगकर जीवन स्तर ऊपर उठा रहे हैं भूमिया जनजाति भारिया जनजाति का एक उपसमूह है। इस जनजाति समूह के लोगों में शिक्षा के स्तर निम्न रही है क्योंकि यह जनजाति दुर्गम क्षेत्रों में निवास करती है जहां आधारभूत संसाधनों के अतिरिक्त कई ऐसे साधन हैं जिसके स्थानीय स्तर पर अभाव है। मोहन्ती (2004 : 46–49) ने अपने अध्ययन में मध्यप्रदेश के भारिया जनजाति का अध्ययन किया है जिसमें केवल 10.12 प्रतिशत साक्षरता दर पाया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में भूमिया जनजाति के लोगों में साक्षरता दर को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है, जिसका विवरण नीचे तालिका में दर्शाया गया है

तालिका क्रमांक – 3
भूमिया जनजाति में शिक्षा का स्तर

क्रं.	शिक्षा का स्तर	वर्तमान अध्ययनरत	पूर्व में अध्ययन किये	कुल आवृत्ति	प्रतिशत
1	निरक्षर	–	–	4708	50.8
2	साक्षर (बिना औपचारिक शिक्षा के)	–	996	996	10.8
3	प्राथमिक	983	1124	2107	22.7
4	माध्यमिक	283	711	994	10.8
5	हाई स्कूल	55	224	279	3.1
6	हायर सेकेण्डरी	09	163	172	1.8
	योग :–	**1330**	**3218**	**9256**	**100**

ISSN No. 3139-9568 (Online)
Vol.- 01 No.1 Issue - Jun-2026

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि भूमिया जनजाति के कुल पारिवारिक सदस्यों का सर्वाधिक 50.8 प्रतिशत सदस्य निरक्षर, 10.8 प्रतिशत साक्षर, 22.7 प्रतिशत प्राथमिक, 10.8 प्रतिशत माध्यमिक, 3.1 प्रतिशत हाईस्कूल तथा 1.8 प्रतिशत सदस्य हायर सेकण्डरी स्तर की शिक्षा प्राप्त की है। अध्ययन में ज्ञात हुआ कि अध्ययनगत समूह के लोगों में केवल 49.12 प्रतिशत साक्षरता दर है तथा वर्तमान में समग्र में से केवल 14.36 प्रतिशत सदस्य अध्ययनरत है। साक्षर सदस्यों में सबसे अधिक 22.7 प्रतिशत सदस्य मात्र प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा प्राप्त किये हैं, जबकि केवल 1.8 प्रतिशत सदस्य हायर सेकण्डरी स्तर की शिक्षा प्राप्त किये हैं, जो भूमिया जनजाति के शिक्षा के निम्न स्तर को दर्शाती है।

उपरोक्त तालिकाओं के वि लेशण से ज्ञात होता है कि भूमियां जनजाति के आधे से अधिक परिवार झरना, डभरी, नाला, नदी जैसे परम्परागत साधनों से पेयजल प्राप्त प्राप्त करता है जिसके कारण इनमें जलजनित रोंगों का शिकायत अधिक पायी जाती है तथा इन रोगों से इन्हें कई बरी जान भी गवानी पडती है। गरमी के मौसम में जल स्त्रोत सूख जाने से इन्हे मिलों दूर से पानी की व्यवस्था करना पडता है पानी के अभाव से निस्तारी एवं साफ–सफाई प्रभावित होता है जिससे यह समूह में साफ–सफाई बगैर रहने का आदत पड गई है जो इन्हें किसी स्लो पाईजन की तरह इनके स्वास्थ्य को प्रभावित करता है । दूर्गम क्षेत्र होने के करण कुछ क्षेत्र में सरकार का पेयजल अधिकाश योजनाएं विफल रहीं है । शिक्षा का अभाव अथवा न्यूनतम् स्तर इन्हें इससे किसी तरह के बचाव जैसे उबालकर पानी पीना, प्रतिदिन स्नान करना जैसे साधन के लिए इनमें जागरूकता और इनभिज्ञता है। इससे बरसात के मौसम में परिवार के लोग दुष्ति पेयजल के सेवान से बडी मात्रा में बीमारी के शिकार होते है । अध्ययन के पूर्व निर्माण की गई दोनो ही भोध उपकल्पना सहीं सिद्व हई है ।

निष्कर्ष एवं सुझाव :–

अध्ययन में प्राप्त तथ्यों के वि लेषण के आधार पर निष्कर्षः यह कहा जा सकता है कि अध्ययनगत भूमियां ग्राम में आधे से अधिक परिवार परिवार परम्परागत जल स्त्रोतों पेयलज आपूर्ति करने विवश है। परम्परागत जल स्त्रोंत में झरना, नाला, डबरी, तालाब एवं नदी से प्राप्त करता है। इससे गरमी के मौसम में जल स्त्रोत सूखने से इनकी पेयजल की

ISSN No. 3139-9568 (Online)
Vol.- 01 No.1 Issue - Jun-2026

समस्या और बड जाती है । जल स्त्रोत सूखने से चाहकर भी प्रतिदिन स्नान नहीं कर सकते इससे इनके फोडा एवं फुंनसी जैसे रोग के शिकार होते है । इनमें शिक्षा कर स्तर निम्न होने से इनके स्वास्थ्य स्तर यथावत बने रहने में मदत मिलता है और बडी संख्या में बीमारी का सामना करते है। शोध अध्ययन में शोध परिकल्पना का निमार्ण किया गया था जिसमें जिस गांव में पेयजल सुविधा उपलब्ध है वहां कम बीमार पड़ते हैं और जहां पेयजल के रूप में परम्परागत जल स्त्रोतों जैसे कुआं, झरना, नाला, डबरी, तालाब, नदी इत्यादि से पेयजल का उपयोग करने वाले भूमिया जनजाति जलजिनत रोगों का शिकार अधिक होते हैं। अध्ययन में निर्माण की गई शोध परिकल्पना प्रमाणित होता है।

भूमिया जनजाति में जनजाति के विकास में शिक्षा का भी बहुत महत्वपूर्ण योगदान है जो लोग शिक्षित हैं अपने स्वास्थ्य के प्रति भी काफी जागरूक हैं और जो अशिक्षित हैं वे अपने स्वास्थ्य एवं जीवन स्तर के प्रति ज्यादा जागरूक नहीं हैं। भूमिया जनजाति शिक्षा के अभाव में इनका रहन–सहन पेयजल सुविधा स्वास्थ्य आर्थिक स्थिति इत्यादि परम्परागत साधनों पर निर्भर है और इनका जीवन स्तर पिछड़ा हुआ है यहां तक की इन गांवों में शासकीय योजनाओं की पहुंच शिथिल अवस्था में होती है। इन लोगों की जीविका पिछड़ा होने का प्रमुख कारण शिक्षा का अभाव है, शिक्षा के अभाव के कारण उचित पेयजल के संबध में जानकारी भी नहीं रख पाते हैं।

उपरोक्त तथ्यों के वि लेषण के पश्चात् प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर निम्न सुझाव भूमिया जनजाति के स्वच्छ पेयजल के संबंध में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं जो निम्न हैं :–

1. भूमिया जनजाति पेयजल हेतु परम्परागम जल स्त्रोतों पर निर्भर रहता हैं, ऐस स्थिति में इन्हें बरसात में पानी उबलाकर सेवान करने के लिए सरकार के स्वास्थ्य अमला जो मैदानी क्षेत्र में कार्यरत है इन्हें जनगरूक करना चाहिए अथवा इन्हें ब्लीचींग पाऊडर, क्लोरीन टेबलेट उपयोग करने के लिए प्रेरित करना चाहिए इससके बरसार में होने वाले मलेरिया पीलिया और डारिया रोगों से इन्हें बचाया जा सकता है ।
2. निस्तारी जल के अभाव में भूमियां परिवार कई दिनों तक स्नान नहीं करता इससे खसरा एवं अन्य रोगों से ग्रसित होता है ऐसे सरकार को स्थानीय स्तर पर जल का प्रबंध करना चाहिए जिससे इनके स्वास्थ्य स्तर सुधारा जा सके ।

3. भूमिया जनजाति अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना तथा यह स्पश्ट जानकारी दी जानी चाहिए दूषित जल से कौन–कौन से रोग होते है तथा उसका उपखार कहां कराना चाहिए रोगों के उपचाार में स्मार्ट कार्ड का कैसे उपयोग किया जा सकता है पूरी जानकारी दिया जाना चाहिए इससे भूमियां परिवार स्वास्थ्य के प्रति सजग होगा और उसका स्वास्थ्य स्तर में सुधार

Referance :

1. **मोहन्ती पी. के.,** इनसाईक्लोपीडिया ऑफ प्रिमिटीभ ट्राईब्स इन इंडिया, कल्पाज पब्लिके ान, दिल्ली, 2004, पृ.
2. डोला सी.के., मेश्राराम पी.के. एवं कुमार दिनेश, न्यूट्रिशनल स्टेटस ऑफ भूमिया ट्राईब्स इन सेन्ट्रल इण्डिया, इण्डियन जर्नल ऑफ प्रिवेंटिव एण्ड सोशल मेडिसिन, 2006, पृ.
3. श्रीवास्तव पी., भूमिया ट्राईब्स ए सार्ट इंट्रोडक्सॅन मानव पत्रिका, इथिनोग्राफिक एण्ड फॉक कल्चर सोसायटी लखनउु, 1996, पृ.
4. यादप, मारकण्डेय सिंह., आदिवासी समुदाय में स्वास्थ्य के कुछ पक्ष रावत पब्लिकेशन दिल्ली, 1994, पृ. 119–120.
5. **रसैल, आर.वी. एवं हीरा लाल,** द ट्राईब्स एण्ड कास्ट्स ऑफ द सेन्ट्रल प्रोविन्सेस ऑफ इंडिया, दिल्ली, 1975, पृ.
6. पत्रिका, दैनिक समाचार पत्र, रायपुर दिनांक 14 मई 2014 पृ.1
7- Sandhu Rajwant, National Rural Drinking water Programme : http://www. indiwaterport.orh.sites/ indiwaterport;